आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 12 अगस्त-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

राज्य सरकार की सौगात : प्रदेश में नया महाविद्यालय खुलेगा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयो और बहनो !

राम–राम सा।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि राज्य सरकार ने हाल ही में अपनी 2019–20 की बजट घोषणा में वेटरनरी विश्वविद्यालय को चौथा संघटक पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय शुरू करने को मंजूरी प्रदान की है। नया महाविद्यालय जोधपुर में खोला जाएगा। महाविद्यालय में विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के तहत स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या वाचस्पति स्तर पर अध्ययन–अध्यापन, विद्यार्थियों को अनुसंधान परियोजना निर्माण, राष्ट्रीय स्तर की सह पाठ्यक्रम कौशल विकास योजनाओं, शैक्षणिक भ्रमण और इंटर्नशिप प्रशिक्षण की सुविधाएं सुलभ होगी। पश्चिमी राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से पशुपालन पर ही निर्भर है। पारंपरिक रूप से यहां गाय, भैंस, भेड़, बकरी और ऊंट पालन प्रमुखता से किया जाता है। यहां स्वदेशी पशुधन की श्रेष्ठ नस्लें पाई जाती है। जोधपुर में महाविद्यालय के माध्यम से संभाग के सभी जिलों जोधपुर, पाली, सिरोही, जालौर, जैसलमेर एवं बाड़मेर जिले के पशुपालकों को वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स के माध्यम से पशुओं की आधुनिकतम तकनीक से उपचार और रोग निदान की निःशुल्क सेवाएं सुलभ हो सकेगी। पशुचिकित्सा शिक्षा के साथ–साथ पशु चिकित्सा विज्ञान के विषय–विशेषज्ञों की परामर्श सेवाएं भी पशुपालकों को मिल सकेगी। नए महाविद्यालय के खुलने से विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों और क्षेत्रीय अनुसंधान कार्यों को तीव्रगति से लागू किया जा सकेगा। जोधपुर में पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान महाविद्यालय की शुरूआत से निकट भविष्य में राज्य में और अधिक पशुचिकित्सकों की उपलब्धता हो सकेगी, जिससे राजस्थान में पशुपालन का क्षेत्र और अधिक सुदृढ़ हो सकेगा साथ ही उन्नत पशुपालक तकनीकों को पशुपालकों के द्वार तक पहुंचाने में तीव्रता आएगी। राज्य सरकार द्वारा दिए गए इस तोहफे से क्षेत्र में पशुपालन समृद्ध बनेगा, जिसका लाभ पूरे पशुपालक समुदाय को मिलेगा।

जयहिन्द !

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

राष्ट्रीय कृषि खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ करार

भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के राष्ट्रीय कृषि खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली (चण्डीगढ़) के साथ वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने करार (एम.ओ.यू.) किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और राष्ट्रीय कृषि खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए। भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के संस्थान के साथ यह पहला आपसी करार है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि यह आपसी करार विश्वविद्यालय के लिए वर्तमान समय में जैव प्रौद्योगिकी तकनीक के माध्यम से कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में खाद्य पदार्थो के गुणवत्तापूर्ण अधिक उत्पादन के लिए उपयोगी होगा। जैव प्रौद्योगिकी में उन्नत किस्म के जीवाणुओं से खाद्य पदार्थो का संस्करण किया जाता है। इससे खाद्य उत्पादों की पौष्टिकता में बढ़ोतरी होती है।

पशुजन्य रोगों के संक्रमण से बचाव के उपाय जरूरी है : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

विश्व जूनोसिस (पशुजन्य रोग) दिवस पर 6 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने वेटरनरी कॉलेज के क्लिनिक में श्वान को रेबीज निरोधक टीका लगाकर वर्ल्ड जूनोसिस डे का शुभारंभ किया। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि पूरे विश्व में हर वर्ष 6 जुलाई को जूनोसिस दिवस मनाया जाता है और जन मानस में इन रोगों के प्रति जागरूकता फैलाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। विश्व में कई प्रकार के पशुजन्य रोग हैं, जो पालतू और वन्य प्राणियों से मनुष्यों में या फिर मनुष्य से पशुओं में संक्रमित हो सकते है जिनमें टी.बी., रेबीज, प्लेग, टिटनेस, डेंगू, इबोला, ब्रसेलोसिस, एन्थ्रेम्स, बर्डफ्लू, ग्लेन्डर्स, क्यू–फीवर आदि शामिल है। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि लोगों को जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी संघटक महाविद्यालयों में पशुओं के टीकाकरण शिविर और अन्य जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने जन जागरूकता के लिए महाविद्यालय के जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयार ''पशुजन्य रोगों से बचाव'' 'शीर्षक एक फोल्डर का विमोचन किया।

राज्य के 32 पशुपालन उप निदेशकों का प्रशिक्षण संपन्न

राज्य के पशुपालन विभाग के 32 उप निदेशकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 12 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय में हुआ। प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशु चिकित्सालयों एवं पशु फॉर्म से निकलने वाले चिकित्सकीय अपशिष्ट मनुष्य और पशुओं में संक्रामक रोगों का एक प्रमुख कारण है। अतः वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्थापित पशु जैव अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केन्द्र द्वारा इस विषय में पशुचिकित्सा अधिकारियों, कार्मिकों और अन्य लोगों को इसके सही निस्तारण व बचाव बाबत प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में पशुओं से मनुष्य और मनुष्य से पशुओं में फैलने वाले रोगों (जूनोटिक) और संक्रमणों से जन मानस और पशुओं के स्वास्थ्य को खतरा बना हुआ है। उन्होंने पशु चिकित्सा अधिकारियों को आह्वान किया कि वे संवेदनशील होकर इसके लिए कार्य करें। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव, अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के.सिंह ने भी संभागियों को सम्बोधित किया।

सहायक प्राध्यापकों का प्रशिक्षण संपन्न

विश्वविद्यालय और व्यक्तित्व विकास के लिए ऑरियन्टेशन जरूरी : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 32 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का 21 दिवसीय ऑरियन्टेशन प्रशिक्षण 11 जुलाई को संपन्न हो गया। समापन अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि शिक्षकों को शिक्षण तकनीकों के साथ–साथ वित्तीय प्रबंधन, प्रशासनिक कुशलता व व्यावहारिक ज्ञान का होना नितांत आवश्यक है। ऑरियन्टेशन कार्यक्रम सहायक प्राध्यापकों को अधिक संवेदनशीलता के साथ कार्य पद्धति को प्रभावशाली बनाता है। ऐसे प्रशिक्षण विश्वविद्यालय के विकास व शिक्षकों के व्यक्तित्व को निखारने के लिए महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. ए.के. गहलोत ने कहा कि संस्थान के प्रति लगाव और कड़ी मेहनत से व्यक्ति और संस्थान का विकास संभव होता है। उन्होंने वर्ष 2030 तक वेटरनरी विश्वविद्यालय को एक अर्न्तराष्ट्रीय संस्थान के रूप में विकसित किए जाने के लिए रोडमैप प्रस्तुत किया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने कहा कि यह प्रशिक्षण शिक्षकों के कैरियर एडवांसमेंट के लिए आवश्यक होता है। कार्यक्रम को राजुवास के कुलसचिव अजीत सिंह एवं वित्त नियंत्रक मीना सोनगरा ने भी संबोधित किया। प्रशिक्षण के समन्वयक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि तीन चरणों में वेटरनरी विश्वविद्यालय के 100 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों के लिए दीर्घ अवधि के तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गए हैं।

प्रशिक्षण समाचार

संभाग के गौशाला प्रबंधकों एवं व्यवस्थापकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

राजस्थान गोपालन विभाग, जयपुर एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा संभाग के पंजीकृत/अंपजीकृत गौशाला प्रबंधकों एवं व्यवस्थापकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण 20 जुलाई को संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू जिलों की गौशालाओं के 40 प्रबंधक एवं व्यवस्थापक शामिल हुए। प्रशिक्षण में 11 विषय विशेषज्ञों की वार्ताओं में गौशाला का प्रबंधन, गायों के रख–रखाव, नस्लों में सुधार, संक्रामक बीमारियों से बचाव, संतुलित आहार के साथ ही गोबर और गौमूत्र के मूल्य संवर्द्धन तथा गौशाला के स्वावलम्बन उपायों

की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के समन्वयक एवं प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के हित में चलाए जा रहे लोक कल्याणकारी कार्यो की जानकारी दी। प्रशिक्षण के अन्तिम दिवस वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने प्रमाण–पत्र वितरित कर गौशालाओं के व्यवस्थापकों को सम्बोधित किया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् रैंकिंग-2018 राज्य के 6 कृषि विश्वविद्यालयों की श्रेणी में वेटरनरी विश्वविद्यालय दूसरे स्थान पर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों की घोषित रैंकिंग–2018 में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय ने गत वर्ष की तुलना में पन्द्रह पायदान की छलांग लगाकर 42वां स्थान हासिल किया है। विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक, अनुसंधान व प्रसार शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य करके यह उपलब्धि हासिल की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि इस रैंकिंग में राज्य के 6 कृषि विश्वविद्यालयों की श्रेणी में वेटरनरी विश्वविद्यालय ने दूसरा स्थान हासिल किया है। देश में 42वीं रेक लेकर सातवें स्थान पर रहा है। गौरतलब है कि भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क–2019 की इण्डिया रैंकिंग में राज्य के राजकीय विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान और देश के वेटरनरी विश्वविद्यालय में प्रथम तीन स्थान पर रहा है। गत एक वर्ष में इस वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपने उत्कृष्ट कार्यो की बदौलत यह उपलब्धि हासिल की है।

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 8, 13, 15, 16, 17, 19, 20 एवं 22 जुलाई को गांव पोटी, गोगटिया चारनाण, भलाऊ ताल, खींवणसर, उदासर, जयसंगसर, मिरवाला एवं चंगोई गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 2, 3, 18, 19, 23 एवं 24 जुलाई को गांव डीगवाली राठान, नेतेवाला, 7 एमएल, अनूपगढ़, साहिबसिंह वाला एवं रामसिंहपुर गांवो में तथा दिनांक 8 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 242 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 10, 11, 16, 19, 20, 23, 24 एवं 25 जुलाई को गांव पिथापुरा, खारा, चवरली, डेरी, नीमतलाई, रिछडी, तलेटा एवं सूरजपुरा गांवो में तथा दिनांक 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 10, 11, 12, 13, 15, 16, 17, 18 एवं 19 जुलाई को गांव छपारा, चकखारड़िया, कोयल, लुकास, जोरावरपुरा, दुदोली, भामासी, नोरंगपुरा, बेड़ एवं मंडास गांवों में तथा दिनांक 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 287 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 8, 10, 11, 16, 17, 19 एवं 20 जुलाई को गांव जैतपुरा, मदनपुरा, मण्डीयाणी, कालीकंकर, बालापुरा, नेडलिया(डांग), नारेली एवं सेदरिया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 263 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9, 10, 13, 16, 18, 20, 24 एवं 25 जुलाई को गांव धुवालिया, मुकरवाड़ा, तरालफलां, रामपुर, बारी फलां, सामितेड, खेडन माता एवं सागवान फलां गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 312 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 11, 12, 13, 15, 17, 18, 20, 22 एवं 27 जुलाई को गांव कोलीपुरा, नगला सिंघाडा, कलोहार, मवई, नगला ज्ञानी, ककराला, इरनिया, बिरावई तथा ढाना गांवो में तथा दिनांक 25 एवं 26 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 11 महिला पशुपालकों सहित कुल 157 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 11, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 22 एवं 23 जुलाई. को गांव हथौना, पराना, नटवाड़ा, सजिया, सीतारामपुरा, देवली भांची, गोपालपुरा, चनानी, मीरनगर एवं सांखना गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 224 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 12, 13, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 22 एवं 23 जुलाई को गांव मलकीसर, खोडाला, भैरूपावा, ढाणी भोपालाराम, कपूरीसर, भेरूखेरा, बदरासर, फुलदेसर, मेहरासर एवं शेखसर गांवों में तथा दिनांक 24 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 252 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 9, 10, 16, 17, 19, 20, 24 एवं 26 जुलाई को गांव खेडली काकोनिया, नयागांव अहीरान, सुहाना, गोदल्या हेडी, प्रहलादपुरा, तोरण, रामखेडली, डाबर एवं चोमाकोट गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 238 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 323 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 9, 11, 13, 17, 18, 19, 20, 24 एवं 26 जुलाई को गांव राजगढ़, नरपत की चोड़ी, कारूण्डा, छापरी, पीपली, अरनोदा, शम्भूपुरा, नयाखेड़ा, लाखा का खेड़ा एवं सुखवाड़ा गांवों में तथा दिनांक 16 एवं 23 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 323 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 10, 11, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 22 एवं 24 जुलाई को गांव बसाई सांमता, शहरोन, मोहाली का पूरा, नुन्हेरा, बधपुरा, पटेवरी, निनोखर, पथरोला कला, सूबेदार का पूरा एवं पीपरीपुरा गांवों में तथा दिनांक 15 एवं 20 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 350 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 11, 12, 16, 17, 18, 19, 20, 23, 24 एवं 25 जुलाई को गांव विश्नोईयों की ढाणी, खोखरिया, दईकड़ा, खटियासनी, बुध नगर, बावरला, अखतली, दान्तीवाड़ा, डांगियावास एवं नादड़ा खुर्द गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 259 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 16 एव 26 जुलाई को गांव रामसरा एवं परलिका गांवों में 17–18 जुलाई को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 86 किसानों ने भाग लिया।

वर्षा ऋतु में पशु प्रबंधन कैसे करें

राजस्थान राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है जिसके अलग अलग क्षेत्रों में वर्षा का स्तर अलग–अलग होता है, लेकिन सभी स्थानों पर वातावरण में नमी बढ़ जाने से विभिन्न प्रकार के मच्छर, मक्खी, कीट–पतंगे व सरीसृप विकसित व सक्रिय होने से पशुओं को कई प्रकार की समस्याओं से सामना करना पड़ता है। वर्षाकाल में कच्चे चारे की पर्याप्त उपलब्धता होने के कारण पशु हरा चारा आवश्यकता से अधिक खा लेते हैं जिससे उनमें अपच, कब्ज, आफरा तथा दस्त की शिकायत हो सकती है। वर्षाकाल में उत्पन्न हुए मच्छर, मक्खी, कीट–पतंगे कई प्रकार के विषाणु व रक्त परजीविओं के वाहक होते हैं। जब यह पशुओं को काटते हैं तो पशु कई प्रकार के विषाणुजनित एवं परजीवी जनित रोगों के शिकार हो जाते हैं।

वर्षा ऋतु में मेगटवूंड (घावों में कीड़े पड़ना) बहुत सामान्य है। वर्षा काल में मक्खियां बहुत सक्रिय होती है और पशु शरीर पर उत्पन्न घावों में अंडे दे देती है। इन अण्डों से निकले लारवा (कीड़े) घाव में कुलबुलाते रहते है और इससे पशुओं को बहुत परेशानी होती है। वर्षा काल में एक सामान्य समस्या सांपो द्वारा काटना (स्नेक बाईट) भी है। सामान्यतः पशु के होठ, टांगों के निचले हिस्से अथवा योनी व मल द्वार जैसे नाजुक अंगो पर सांप के काटने की घटना ज्यादा देखी गई है। सांप काटने के स्थान पर सूजन हो जाती है और बहुत तेज दर्द होता है। कई बार रात में पशु स्वस्थ छोड़ा जाता है और सुबह बाड़े में वह मृत मिलता है। इस मौसम में पशुओं में जोंक का लगना भी एक आम समस्या है जिससे पशु को काफी दर्द व परेशानी होती है। जोंक खून पीकर हट जाती है, लेकिन काटे गए स्थान से लगातार खून बहता रहता है।

बचाव के लिए सावधानियां :

1. पशुओं के रहने का स्थान साफ व सूखा रखें, कचरे और गन्दगी के ढेर ना हो ताकि वहां मच्छर, मक्खी कीट–पंतगे विकसित न हो सके।
2. पशुओं को आवश्यकता से अधिक हरा चारा ना खिलाया जाये तथा हरे चारे के साथ सूखी तूड़ी भी मिलाकर खिलाई जानी चाहिए।
3. भेड़–बकरियों को सीमित मात्रा में ही खेतों मे चरने दें।
4. पशुघर में चूहों का आगमन नहीं होना चाहिए ताकि सांप आकर्षित न हो। सांपों से बचाव के लिए बाड़े के चारों और 1 फुट चौड़ी व एक फुट गहरी खाई/खाली बनाकर उसमें पानी डाल कर रखें जिससे सरीसृप बाड़े में प्रवेश न करें।
5. मच्छर–मक्खी, कीट–पतंगों के प्रकोप से बचाने के लिए पशु बाड़े के आसपास पानी इकट्ठा न होने दें व मच्छर–कीट मारने की दवा का प्रयोग करें। पशुओं को पीने के लिए स्वच्छ जल उपलब्ध करायें, ताकि गड्डे पोखर से पशु संक्रमित पानी न पियें।
6. पशुओं के शरीर पर यदि कोई घाव इत्यादि हो तो उसका विशेष ध्यान रखें क्योंकि वर्षाकाल में इन घाव में कीड़े इत्यादि पड़ने की संभावना रहती है। इस समय अन्तः परजीवियों से बचाव के लिए कृमिनाशक दवा पशुचिकित्सक की देखरेख में देनी चाहिए।

पशुओं को विशेषतः बछड़े–बछड़ी और पाडे–पाड़ियों को अत्यधिक बरसात में भीगने से बचाना चाहिये, ज्यादा बरसात में भीगने से इनमें न्यूमोनिया की शिकायत होने की संभावना रहती है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

भारत में मुर्गी पालन से रोजगार सृजन की अपार संभावनाएं

भारत में मुर्गी–पालन का व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं भूमिहीन कृषकों के जीवन यापन का एक माध्यम है, जो कम लागत होने के कारण अतिरिक्त आय अर्जित करने का स्त्रोत भी है। मुर्गी पालन न केवल बेरोजगारी जैसी जटिल समस्या का समाधान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है, साथ ही यह जान्तव्य प्रोटीन को मुर्गी के अण्डों एवं मांस के रूप में उपलब्ध कराने का आसान उपाय भी है। मुर्गी–पालन का व्यवसाय हमारे देश में पिछले तीन दशकों से यह एक उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। मुर्गी पालन व्यवसाय से महिलाएं भी आर्थिक दृष्टि से अधिक समृद्धशाली बन सकती है। इस व्यवसाय के साथ जुड़े अन्य क्षेत्र जैसे मुर्गी आहार–जैव–उत्पाद–दवाई एवं उपकरण बनाने वाले उद्योगों का विकास भी जुड़ा है, जिससे रोजगार के अनेक अवसर पैदा हो सकते हैं। भारत में मुर्गी–पालन व्यवसाय सामान्य तौर से संगठित एवं असंगठित पद्धति के रूप में विकसित हुआ है। असंगठित तरीकों से मुर्गी–पालन घर के पिछवाड़े रखी गई मुर्गियों के द्वारा किया जाता है जबकि संगठित मुर्गी–पालन वैज्ञानिक ढंग से प्रबन्धकीय एवं प्रजनन कार्यक्रमों को अपनाकर एक समृद्ध एवं टिकाऊ व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ है। इस पद्धति से पाली गयी मुर्गियों में उत्पादन क्षमता भी असंगठित पद्धति से पाली गई मुर्गियों की अपेक्षा अधिक होती है। कुक्कुट उद्योग के सामने सबसे जटिल समस्या मुर्गियों में बीमारियों के भयंकर प्रकोप का होना है, जिससे अत्यधिक मृत्युदर एवं अस्वस्थता होने के फलस्वरूप मुर्गी–पालकों की अत्यधिक आर्थिक हानि होती है। टीकाकरण यद्यपि मुर्गियों को बीमारियों के प्रकोप से बचाने का अच्छा उपाय है परन्तु टीकाकरण के साथ–साथ बीमारियों के बचाव के अन्य उपायों पर भी ध्यान देने की जरूरत है जिससे मुर्गियों की रोग–प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे। मुर्गियों का प्रजनन रोग–रोधक क्षमता के गुणों को ध्यान में रखकर करना, वातावरणीय प्रत्याबल के दबाव को उपयुक्त प्रबन्धकीय प्रयासों से कम करना तथा जैव–सुरक्षा के उपायों को सख्ती से लागू करना शामिल है।

मुर्गियों का बीमा– बीमारी या दुर्घटना से होने वाली मुर्गियों की आर्थिक हानि से बचाने के लिये जुलाई 1978 में मुर्गी बीमा योजना प्रारम्भ की गई थी। आज कई बीमा कम्पनियां देश में यह कार्य कर रही हैं।

बैंकों से ऋण– सरकारी तथा व्यापारिक बैंक दो जमानतों के बाद मुर्गी पालन के लिये ऋण देता है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) मुर्गी पालन योजनाओं को वित्तीय सहायता देता है। यह सहायता छोटे तथा सीमान्त किसानों को और मुख्यतय बेरोजगार स्नातकों को निम्न के लिए दिया जाता है–

1. हेचरी के लिये।
2. अण्डे देने वाली मुर्गियों के लिये।
3. मांस के लिये पाली जाने वाली मुर्गियों की किसी योजना के लिये।

मुर्गी में होने वाली मुख्य बीमारियां –

1. **विषाणु जनित रोग–** जैसे रानीखते, पॉक्स, मेरेक्स, गुम्बारो, संक्रामक बोन्काइटिस, बर्डफ्लू, लिम्फोइड ल्युकोसिस रोग, इन्फैक्सियस लैरिंगोट्रेकाईटिस रोग, चिकन इन्फैक्सियस अनीमिया लीची रोग।
2. **जीवाणु जनित रोग–** ओम्फलाइटिस रोग, पुलोरम, फाऊल टाईफाइड, फाऊल पैराटाइफाइड, हैजा, कोराइजा (संक्रामक जुकाम), कोली–सेप्टिसीमिया रोग, पुराना जुकाम (CRO), माइकोप्लाजमा साइनोविया रोग, ऊतकक्षयी आंत्रशोध रोग, मुर्गियों का तपेदिक (T.B.)
3. **फफूंद जनित रोग–** ब्रूडर न्यूमोनिया, थ्रस, फेवस, फफूंदी विषाक्तता।
4. **परजीवी जनित रोग–** ब्राह्य परजीवी (माइटस, पिस्सू बग्स, जूएं आदि), अन्तः परजीवी (गोलकृमि, सिस्टोइस, स्पाइरोकिटोसिस), प्रोटोजोअन रोग – कोक्सिडियोसिस (खूनी पेचिस)।
5. **पोषण सम्बन्धी रोग–** एविटामिनोसिस, पोली न्यूरिटिस,डरमेटाइटिस, पेरोसिस, एनसिफलोमेलेसिया, रिकेट्स, हेमोरेजिक रोग।
6. **देखभाल की कमी से होने वाली प्रमुख बीमारियां–** गर्मी का तनाव, ठंड का प्रकोप, स्वाजातिभक्षण, अण्डे खाने की आदत, मिट्टी खाना।

रानीखेत रोग–

लक्षण –

1. **चूजों में–** छींकना, सांस के साथ आवाज, कठिनाई से श्वांस लेना, पैरों का लकवा मारना, मांसपेशियों के अकड़न, असामान्य घूमना, मृत्युदर 100 प्रतिशत।
2. **मुर्गियों में–** श्वसन में कठिनाई, भूख कम, उत्तेजना, अण्डा उत्पादन में भारी कमी, अण्डों का पतला कवच, सिर पैरों के बीच झुका हुआ या फिर कन्धों के पीछे की ओर खींचा हुआ, शरीर एवं सिर में कम्पन, मृत्यु दर 100 प्रतिशत।

रोकथाम/बचाव– (क) लासोटा/एफ–1 स्ट्रेन का टीका एक सप्ताह के अन्दर चूजों में।
(ख) एफ–1 स्ट्रेन का टीका दोबारा 4–5 सप्ताह की उम्र में।
(ग) आर–2 बी स्ट्रेन का टीका फिर 8 से 10 सप्ताह की आयु में।
(घ) एक बूस्टर सुई फिर 16 से 18 सप्ताह की आयु में दें।

उपचार– प्रभावी नहीं/रोग से प्रभावित मुर्गियों को एन्टीवॉयविक्स, मल्टीविटामिन तथा प्रत्याबल कम करने वाली दवाईयों को पानी में मिलाकर देना चाहिए।

बर्डफ्लू रोग–

बर्डफ्लू (एवियन इनफ्लूएन्जा) मुर्गियों में होने वाला एक भयंकर संक्रामक रोग है जो एवियन इन्फ्लूएन्जा विषाणु से होता है।

लक्षण– इस बीमारी का प्रकोप मुर्गियों में अचानक होता है तथा यह बीमारी मुर्गियों में बड़ी तीव्र गति से फैलती है। अचानक मृत्युदर बढ़ जाना, दस्त लगना, सांस लेने में कठिनाई होना, चेहरे व गर्दन पर सूजन आना, मुंह व नाक से लार निकलना, छींक आना, खांसी आना, पंखों का लटक जाना, कलंगी व गलचर्म का रंग नील लोहित हो जाना तथा नीललोहित रंग के धब्बों का मुर्गी के पैरों पर दिखाई देना, अण्डों की पैदावार कम हो जाना तथा पतले छिलके के अण्डे पैदा होना।

उपचार– इस बीमारी का कोई कारगर उपचार नहीं है अतः इस बीमारी के लक्षण जैसे ही मुर्गियों में दिखाई देने लगे तब अतिशीघ्र पशु चिकित्सक या पक्षी रोग विशेषज्ञ की सलाह लेनी चाहिए।
इस रोग की आशंका वाली मुर्गियों को तुरन्त पशु चिकित्सक की निगरानी में मार देना चाहिए तथा मरी हुई मुर्गियों को तुरन्त गहरे गड्ढे में गाड़ देना चाहिए तथा साथ–साथ चूना डाल देना चाहिए।

बर्डफ्लू की रोकथाम–

1. जिन मुर्गियों में बर्डफ्लू रोग की पुष्टि हुई हो ऐसे मुर्गी–गृहों का अच्छी प्रकार से रोगाणुनाशन करना चाहिए तथा नई मुर्गियों को ऐसे मुर्गी–गृहों में कम से कम 21 दिन बाद ही दुबारा से रखना चाहिए।
2. मुर्गी फार्म को एकान्त जगह में बनाने से जैव सुरक्षा बढ़ जाती है। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि मुर्गी फार्म के आस–पास पानी के स्त्रोत जैसे तालाब इत्यादि न हो। मुर्गी फार्म बनाते समय इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि वन्य पक्षी, चूहे व अन्य जानवर फार्म में न घुसने पाएं।
3. मुर्गियों के लिए पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए, इसके लिए पीने के पानी की निरन्तर जांच करवानी चाहिए। दाने व पानी के बर्तनों को साफ करने के लिए रोगाणुनाशक का इस्तेमाल करना चाहिए।
5. मुर्गी फार्म में हवा का पर्याप्त संचार होना चाहिए।
6. मुर्गी फार्म के आस–पास 6 फुट के क्षेत्र को बहुत साफ सुथरा रखना चाहिए जिसमें किसी प्रकार की वनस्पति या घास न हो। मुर्गियों के मल–मूत्र, पंख या अन्य सड़न पैदा करने वाले पदार्थों को भी तुरन्त फार्म से हटा देना चाहिए।

डॉ. जे. पी. कच्छावा,(मो. 9414069330) डॉ. सीताराम गुप्ता, राजेन्द्र यादव, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

संतुलित पशु आहार – पशुपालन का आधार

संतुलित पशु आहार : चारे व दाने का वह मिश्रण जिसमें पशु के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा एवं सही अनुपात में मौजूद हो संतुलित आहार कहलाता है।

संतुलित आहार कैसे एवं कितनी मात्रा में देना : पशुओं में लाभकारी पशुपालन हेतु संतुलित आहार की पूर्ति के लिए पशुपालकों को ऐसे खाद्य पदार्थ, जो सस्ते दामों पर आसानी से उपलब्ध हो। जैसे– सूखी घास, तूड़ी, कड़बी, दलहनी चारे एवं आवश्यकतानुसार दाने मिश्रण में मक्का, जौ, ज्वार, चापड़, चूरी कोरमा एवं खल आदि का प्रयोग करना चाहिए। संतुलित आहार स्थानीय रूप से उपलब्ध उपरोक्त घटकों को मिलाकर तैयार किया जा सकता है। पशुओं को आहार की मात्रा उनके शारीरिक भार के अनुसार दे अर्थात् 2.5 से 3.0 किलो आहार प्रति सौ किलो भार के लिए दें। हमारे क्षेत्र में पाये जाने वाले देशी पशु सामान्यतया 300 से 350 किलो वजन के होते है इसके हिसाब से 8 से 10 किलो आहार की आवश्यकता प्रतिदिन रहती है। संकर नस्ल की गायों का शारीरिक भार अधिक होता है। अतः उनके आहार की मात्रा प्रतिदिन करीब 10 से 12. 5 किलो होती है।

दाना (सांद्र) मिश्रण बनाना : दाना मिश्रण में कोई एक दाना न देकर कई दानों का संतुलित मिश्रण जिसमें करीब 18 से 22 प्रतिशत प्रोटीन एवं 60 से 70 प्रतिशत कुल पचनीय पोषक तत्व हो बनाकर पशुओं को देना चाहिए। दाना मिश्रण में जौ या मक्का का दलिया, गेहूं या चावल की चापड़, चूरी, कोरमा, खल आदि सही अनुपात में मिलाने चाहिए। दाना मिश्रण में दो प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण व 1 प्रतिशत नमक आवश्यक रूप से मिलाना चाहिए। दाना मिश्रण खिलाने से कुछ घंटों पहले पानी में भिगोना चाहिए तथा खिलाते समय इसमें थोड़ा सा सूखा चारा मिलाकर सानी के रूप में खिलाना अधिक उपयुक्त रहता है।

दाना मिश्रण की मात्रा कितनी दें : शारीरिक रख–रखाव के लिए 400 किलो औसत वजन के पशु को करीब 1.5 किलो दाना मिश्रण प्रतिदिन।

दुग्ध उत्पादन के लिए : दुधारू पशुओं के रख–रखाव के लिए दिये जाने वाले मिश्रण के अलावा दूध की मात्रा के अनुसार अतिरिक्त दाना मिश्रण निम्नानुसार दें– गायों के प्रति 2.5 किलो दूध के लिए एक किलो दाना मिश्रण (इस प्रकार दस किलो दूध देने वाली गाय को प्रतिदिन 4.00 किलो दुग्ध उत्पादन हेतु 1.5 किलो रख–रखाव के लिए यानि 5.5 किलो कुल दाना मिश्रण देना चाहिए) भैंसों में प्रति 2 किलो दूध के लिए एक किलो दाना मिश्रण।

उदाहरण के रूप में कुछ दाना–मिश्रण नीचे दर्शाये गये हैं –

नमूना संख्या – 1

जौ का दलिया	30 किग्रा
गेंहू की चापड़	30 किग्रा
मूंगफली की खल	20 किग्रा
चना	17 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –2

मक्का का दलिया	40 किग्रा
गेंहू का चापड़	30 किग्रा
मूंगफली की खल	20 किग्रा
चना	07 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –3

जौ का दलिया	30 किग्रा
वसा रहित चावल चापड़	35 किग्रा
ग्वार का कोरमा	22 किग्रा
बिनौला की खल	10 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –4

जौ का दलिया	30 किग्रा
वसा रहित चावल चापड़	30 किग्रा
बिनौला की खली	20 किग्रा
ग्वार कोरम	17 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –5

जौ का दलिया	30 किग्रा
गेहूं की चापड़	30 किग्रा
बिनौला की खल	17 किग्रा
ग्वार चूरी	20 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –6

मक्का का दलिया	30 किग्रा
चावल की चापड़	10 किग्रा
चना	27 किग्रा
बिनौले की खल	20 किग्रा
मूंगफली की खल	10 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –7

जई का दलिया	30 किग्रा
गेहूं का चापड़	10 किग्रा
मूंगफली की खल	20 किग्रा
चना	37 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

नमूना संख्या –8

मक्का का दलिया	30 किग्रा
गेहूं की चापड़	20 किग्रा
बिनौले की खल	25 किग्रा
सरसों एवं तारामीरा की खल	22 किग्रा
खनिज मिश्रण	02 किग्रा
नमक	01 किग्रा

डॉ. राजेश नेहरा, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (9799474858)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, सवाईमाधोपुर, अलवर, बूंदी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, राजसमन्द, जैसलमेर, जोधपुर
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (तीन दिन का बुखार)	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जयपुर, अलवर, सीकर
पी.पी.आर	बकरी भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, बीकानेर, चूरू, पाली, सिरोही, सीकर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस, गौवंश, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, टोंक
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, झुंझुनूं
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बांसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, धौलपुर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, पाली, सिरोही
सर्रा	ऊँट, भैंस, गौवंश	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बूंदी, सीकर, श्रीगंगानगर, भरतपुर
रक्त परजीवी (थाइलेरिओसिस, बेसिओसिस)	भैंस, गौवंश	बांसवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, सीकर, भरतपुर
अन्तःपरजीवी (कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बूंदी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, अलवर
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, जयपुर, अलवर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन से रतनाराम संतुष्ट और सुखी है

नागौर जिले के डीडवाना तहसील के दाऊदसर गांव के रतनाराम थौरी ने मिश्रित पशुपालन अपनाकर आर्थिक रूप से मजबूती हासिल की है। वर्षा आधारित कृषि की स्थिति में पशुपालन नागौर जिले के पशुपालकों की आय का सुदृढ़ स्त्रोत रहा है। पशुपालन से आर्थिक संपन्नता की एक ऐसी मिशाल दाऊदसर के रतनाराम ने पेश की है। खेती के साथ–साथ वह 15 बकरे–बकरियां, 5 गाय एवं 3 भैंस रखते हैं। इनमें प्रतिवर्ष वह करीब 10 बकरे जिनका वजन 70–80 किलो प्रति बकरा होता है, का विक्रय करके प्रतिवर्ष 5–6 लाख रू. की आमदनी कर लेते हैं। गाय एवं भैंस से प्रतिदिन 50 लीटर के करीब दूध का उत्पादन होता है। जिससे वे बाजार में सीधा बेचकर आमदनी के साथ दूध से घी का भी उत्पादन करते हैं। दूध औसतन 40 रू. प्रति लीटर एवं घी 600 रू. प्रति किलो के हिसाब से बेचते हैं। इसी प्रकार पशुपालन से आमदनी करके वह लगातार आर्थिक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं। वर्तमान समय में कम वर्षा, बेरोजगारी की समस्या के बीच पशुपालन जैसे स्व–रोजगार से आर्थिक स्वालम्बन का एक अच्छा उदाहरण है। रतनाराम समय–समय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) से उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर पशुपालन में लागू करते है। पशुओं के टीकाकरण, संतुलित आहार एवं रोगों से बचाव एवं उपचार बाबत पूर्ण जानकारी लेकर अपने पशुओं की पूरी देखभाल करते हैं। रतनाराम गांव में ही रहकर अपने कारोबार से पूरी तरह संतुष्ट और सुखी है। **सम्पर्क–रतनाराम थौरी मो. 8058312281**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

पशुओं के लिए हरे चारे का संरक्षण सुनिश्चित करें

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों !

मानसून की बरसात के साथ ही खेतों और खलिहानों में हरी घास की बहुतायत होती है। हरा चारा दानों की अपेक्षा पोषक तत्वों की प्राप्ति का सस्ता स्त्रोत है। इसकी उपलब्धता से दानों तथा पशु आहार पर होने वाले अतिरिक्त खर्चे को कम किया जा सकता है। हमारे राज्य में चारे की उत्पादन स्थिति संतोषजनक नहीं हैं। पशुपालन विभाग के एक आंकलन के अनुसार वर्ष 2020 में राजस्थान में हरे चारे की मांग 67.7 मिलियन टन की है जबकि आपूर्ति 40.0 मिलियन टन ही है। इसकी मांग और आपूर्ति में 27.7 मिलियन टन का अंतर है। सूखे चारे की मांग 66.4 मिलियन टन बताई गई है। इसकी आपूर्ति 28.5 मिलियन टन है। इस प्रकार मांग और आपूर्ति में 37.9 मिलियन टन का अन्तर बताया जा रहा है। मांग–आपूर्ति के अंतर को कम करने के लिए किसानों को खेती के एक हिस्से में पशुओं के लिए हरे चारे की फसल लगानी चाहिए। खेत के चारों ओर चारा उत्पादन वृक्षों का रोपण कर चारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। वर्षा की अनिश्चितता बढ़ने तथा भूजल स्तर के निरंतर घटने से यह स्थिति ओर भी विकट होती जा रही है। अतः किसानों को उन्नत कृषि तकनीक जैसे सूक्ष्म सिंचाई व बूंद–बूंद जैसी सिंचाई तकनीकों का उपयोग करके चारा उत्पादन बढ़ाना चाहिए। हरे चारे के अतिरिक्त उत्पादन को साइलेज व ''हे'' के रूप में संरक्षित कर उपलब्धता को बनाए रख सकते हैं। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य तथा अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्हें संतुलित आहार उपलब्ध करवाना चाहिए। पशु आहार पौष्टिक तथा सस्ता हो, जिसमें सूखे चारे एवं दाना मिश्रण के साथ हरे चारे का विशेष महत्व है। अतः कम लागत में पूरे वर्ष पर्यन्त हरे चारे की आपूर्ति को सुनिश्चित किया जाना जरूरी है। हरे चारे के अभाव में पशु स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है जिससे उनके उत्पादन में कमी, बांझपन, अंधापन तथा अन्य रोग बढ़ रहे हैं। मेरा सभी किसान और पशुपालक भाइयों से आग्रह है कि, वे हरे चारे का संरक्षण और उपयोग सुनिश्चित करें।

–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अगस्त 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. सुरेश झीरवाल **9414242872** पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बछड़ों में पाये जाने वाले शल्य रोग एवं उनके उपचार	01.08.2019
प्रो. संजीता शर्मा **9649551451** अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर	पशुओं में स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं मानव स्वास्थ्य में इसकी महत्ता	15.08.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224